इस्लाम के पाँच बुनियादी अरकान

तौहीद - नमाज़ - रोज़ा - हज्ज और ज़कात

की हक़ीक़त पर सरकार गरीब़ नवाज़ की तालीमात

असरारे हक़ीक़ी

(हकीकत के राज़)

मारिफ़ते इलाही

क़ुर्बे इलाही

रज़ा ए इलाही

सुल्तानुल हिन्द

ग़रीब नवाज़ हुज़ूर ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाहि अलैह

ने

अपने ख़लीफा ए ख़ास ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अलैह

के नाम सादिर फ़रमाया

पेशकश : GHAUS O KHWAJA O RAZA TRUST

इस्लाम के पाँच बुनियादी अरकान

तौहीद – नमाज़ – रोज़ा – हज्ज और ज़कात

की हक़ीक़त पर सरकार गरीब़ नवाज़ की तालीमात

(हकीकत के राज़)

सुल्तानुल हिन्द

ग़रीब नवाज़ हुज़ूर ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाहि अलैह

ने

अपने ख़लीफा ए ख़ास ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अलैह

के नाम सादिर फ़रमाया

पेशकश : GHAUS O KHWAJA O RAZA TRUST

Click www.ghausokhwajaorazatrust.com

पेशे लफ्ज

हम्द व सना

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

या अल्लाह, तमाम तारीफे तेरे लिए, तू ही तारीफ के लायक है, तेरी जात बेमिस्ल व यकता है, तू हमेशा से है, हमेशा रहेगा। तू एक है, पाक है, तू ही इबादत के लायक है। तू ही सारी चीजों को बनाने वाला है। तू ही सारे जहां का रब है। या अल्लाह तू मेरा खुदा, मैं तेरा बंदा, तूने मुझे इबादत के लिए बनाया और कुरआन मेरे हिदायत के लिए उतारा, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को राहे हिदायत और तरीका ए सुन्नत के लिए भेजा, औलिया का सिलसिला वसीला के लिए कयामत तक जारी रखा ताकि मैं कुरआन से हिदायत पाउँ, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुन्नतों को अपनाउं और तेरे आलिया के वसीले से ईमान वाला बन जाउँ,

ऐ मेरे रब तेरा एहसाने अज़ीम है की आदम अलैहिस्लाम को अपने कुद़रत वाले हाथ से बनाया और उनकी औलाद हमे बनाया और सबसे बड़ा एहसान ये है कि जिस हबीब को तूने अपने नूर की तजल्ली से बनाया उसका उम्मती हमे बनाया यानी अशरफुल मखलुकात बनाया और शुक्र है तेरी दुनियावी और उखरवी नेयमतों का जिसे मैं शुमार भी नहीं कर सकता। या अल्लाह तुझ से अज़ीम, रहीम, करीम, मतीन, अलीम, हलीम, हकीम व बातिन कोई नही।

दरूद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनाहगार उम्मतियों का नबी बनाया दरूद व सलाम हो असहाब पर और नबी के आल पर जिनका सिलसिला तूने कयामत तक जारी रखा, और सलामती हो उन तमाम मोमिन मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किया।

पहले इसे पढ़े

क़ारेईने किराम किताब असरारे हक़ीक़ी हिन्दी ज़बान में शाया की जा रही है ताकि आपको म'अलूम हो जाए हमारे आक़ा, हिन्द के बादशाह, हिन्दल वली, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाहि अलैह ने जो ख़त लिखा था अपने महबूब ख़लीफा हज़रत ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अलैह को, उसमें क्या मज़ामीन हैं।

वाज़ेह रहना चाहिए कि येह इल्मे हक़ीक़ी की बातें हैं और इन्हें समझने के लिए ला मुहाला किसी पीरो मुर्शिद की मदद दरकार है।

येह किताब हम ख़ास तौर पर उनके लिए शाया कर रहे हैं जो अहले बैत (मुरीद) हैं और जो हक़ की तलाश में सर गर्दा हैं।

हमने पूरी कोशिश की है कि लफ्ज़ ब लफ्ज़ जैसा असरारे हक़ीक़ी में मौजूद है वैसा ही आपके सामने पेश किया जाए। फिर भी कोई भूल हो गई हो तो ख़्वाजा साहब से म'आफ़ी चाहते हैं और आपसे दरख़्वास्त है कि आप अगर उर्दू जानते हैं तो ओरिजिनल किताब से मिला सकते हैं और अपने पीरो मुरशिद से बात करके समझ सकते हैं।

अल्लाह हमें तौफीक़ दे कि मुहम्मद मुस्तफा ﷺ के नक़्शे कदम पर चलें और अल्लाह हमारे दिल को ऐसे ईमान से ज़िन्दा करे जैसा कि इसका हक़ है।

सुन्नी तंज़ीम

Online/Offline Deeni Khidmat

Ghaus o Khwaja o Raza Trust

Allah Ki Raza Ke Liye

यहाँ दुनियादारी के अलावा हर दीनी ख़िदमत (माली, बदनी व रूहानी) किया जाता है

अल्लाह की रज़ा के लिए

ईमान की तहफ्फुज | इस्लाहे अक़ाइद

इस्लाहे नियत | इस्लाहे इल्म | इस्लाहे आमाल

इस्लाहे मुआशरा | हुकूकुल्लाह की अदायगी | हुकूकूल इबाद की अदायगी

Click : www.ghausokhwajaorazatrust.com

Founder : Sufi Anwar Raza Khan Qadri

अर्ज़े मुतर्जिम

मौजूदा दौर में मुसलमान तेज़ी के साथ दीन से दूरी बना कर दुनिया के क़रीब जा रहे हैं। दुनियवी इल्म के हुसूल में दीनी इल्म को बिल्कुल तर्जीह नहीं देते और उर्दू व अरबी पढ़ने की क़ाबिलियत दिन ब दिन कम होती जा रही है। अगर इस ग़फ़लत (दुनियादारी) को दूर न किया जाए तो दीन व ईमान पर क़ाइम रहना मुमकिन नहीं है।

लोगों की इस्लाह के लिए इस ख़ादिम की तरफ़ से औलिया अल्लाह और औलमा ए हक़ की तालीमात, उनकी तहरीरें जो उर्दू ज़बान में हैं हिंदी ज़बान में शाया करके अवामुन्नास व हक़ के तलबगारों के सामने पेश करने की कोशिश है ताकि हिंदी ज़बान के ज़रीए ही उन्हें राहे हक़ की जानिब माइल किया जाए।

हिन्दी जानने वाले हज़रात में दीनी किताबें पढ़ने का शौक़ तो है लेकिन आज बातिन की इस्लाह के लिए हिन्दी में किताबें न के बराबर हैं।

अल्लाह के फ़ज़्ल से हमारी तंज़ीम ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट के बानी और मुत'अल्लिक़ा टीम की मेहनत से ज़ेरे नज़र किताब असरारे हक़ीक़ी जो ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तसव्वुफ़ पर मुश्तमिल मकतूबात का मजमूआ है (ऐसी नसीहतें जो दिल को नफ़्स की ख़्वाहिश, शैतान की अदावत, दुनिया की महब्बत, कुफ़्फ़ार की मुशाबिहत वग़ैरह से बचाकर इसे नूरे ईमान से जगमगा देती है) हिन्दी ज़बान में मौजूद हुई है।

हमनें महसूस किया कि हिन्दी जानने वालों के लिए ऐसे लिटरेचर की ज़रूरत है जिससे उनके अक़ाइद व आमाल, ज़ाहिर व बातिन की इस्लाह हो जाए। इसी के मद्दे नज़र ख़ादिम ने हिन्दी में येह छोटी सी कोशिश की है ताकि क़ारेईन फ़ाएदा हासिल कर सकें। अगर कहीं ग़लती नज़र आए तो बाख़बर करदें ताकि अगले एडीशन में ठीक कर लिया जाए।

आख़िर में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में दुआ करता हूँ कि अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफा ﷺ के सदक़ा-व तुफ़ैल और औलिया ए किराम व औलमाए इज़ाम के वसीले से हम सब को ईमान व अक़ीदे की फ़िक्र अता फ़रमाए।

ख़ादिम

सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ाँन क़ादरी

बानी ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट

व ख़ादिम ख़ानक़ाहे चिश्तिया क़ादरिया

रांची, झारखण्ड (इंडिया)

हि. 6 रजब 1445 / ई 18 जनवरी 2024

फेहरिस्त

हिन्दी तर्जुमा

मकतूब सुल्तानुल हिन्द
हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाहि अलैह

हिस्सा अव्वल

मुख़्तसर हालात

हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाहि अलैह

नसब नामा

आपका नसब नामा बमौजिब तहरीर किताब जवाहिरुल फ़रीदी रियादुल फ़िरदौस हस्बे ज़ैल है

शैखे़ ज़माना महबूबे रहमानी सुल्तानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा सैयद मुईनुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैह

1. बिन ख़्वाजा ग़यासुद्दीन हसन संजरी रहमतुल्लाहि अलैह
2. बिन सैयद हसन अहमद रहमतुल्लाहि अलैह
3. बिन सैयद ताहिर रहमतुल्लाहि अलैह
4. बिन सैयद अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि अलैह
5. बिन सैय्यद अल जासीम रहमतुल्लाहि अलैह
6. बिन इमाम महदी
7. बिन इमाम अस्करी
8. बिन इमाम तक़ी
9. बिन इमाम अली
10. बिन इमाम मूसा रज़ा
11. बिन इमाम मूसा काज़िम
12. बिन इमाम जाफ़र सादिक़
13. बिन इमाम मुहम्मद बाक़िर

14. बिन इमाम ज़ैनुल आबिदीन
15. बिन इमाम सैय्यदुल शोहदा ए कर्बला इमाम हुसैन रदीअल्लाहु अन्हु
16. बिन ख़लीफ़ा ए चहारुम शेरे ख़ुदा हज़रत अ़ली अल मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वज्हहुल करीम

आप शैख़ुल मशाइख़ हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाहि अलैह के ख़लीफ़ा ए अरशद और हज़रत महबूबे सुब्हानी सैयद शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी व शैख़ नजमुद्दीन कुबरा रहमतुल्लाहि अलैह व शैख़ शिहाबुद्दीन सोहरवर्दी रहमतुल्लाहि अलैह व शैख़ स'अदी रहमतुल्लाहि अलैह मुसन्निफ़ "गुलिस्तान कुदसिल्लाह असरारे हम" के हम अस्र और हम ज़माना थे।

हिन्दुस्तान में दीने इस्लाम की इशाअत सबसे पहले आप ही के वजूदे मस'ऊद के बदौलत हुई वरना आपकी तशरीफ़ आवरी से पहले हिंदुस्तान सारे का सारा कुफ़्र और बुत परस्ती का आमाजगाह (अड्डा) बना हुआ था। आप कई मर्तबा देहली (दिल्ली) भी तशरीफ़ लाए रहे। लेकिन इक़ामत दारुल ख़ैर अजमेर शरीफ़ में ही फ़रमाई । आप की बरकत से हज़ारहा मुश्रिकीन और कुफ़्फ़ार मुशर्रफ़ बा इस्लाम हुए और बेशुमार तिशनगाने तौहीद आपके चश्मा ए फ़ैज़ से सैराब हुए और आपके सिलसिला में बहुत से शोहराहे आफ़ाक़ औलिया-ए-किराम गुज़रे हैं मसलन हज़रत ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार क़ाकी रहमतुल्लाहि अलैह, ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन गंजे शकर पाकपत्तनी रहमतुल्लाहि अलैह, हज़रत शैख़ नसीरुद्दीन चिराग़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह वग़ैरह।

आप मुवर्रख़ा 6 रजबुल मुरज्जब 633 हिजरी बरोज़ जुम'आतुल मुबारक इस दारे फ़ानी से दारुल बक़ा की तरफ़ रेहलत फ़रमा गए। अजमेर शरीफ़ में ही वासिल बहक़ हुवे और वहीं आप का मज़ारे मुक़द्दस है। जो आज तक मर्जा ए ख़लाइक़ बना हुआ है।

मुख़्तसर अहवाल

हज़रत कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अलैह

आपका नाम व इस्मे गिरामी बख़्तियार बिन अहमद बिन सैयद मूसा है, समरक़ंद और अंदरजान के दरमियान एक मुल्क है जिसका नाम फ़रग़ाना है। इसमें औश नामी एक बस्ती है वहां के बशिन्दे थे। 'काकी' के लक़ब से आप इसलिए मुलक़्क़ब हुए की एक बक़्क़ाल आपका हमसाया था, आप उससे क़र्ज़ लिया करते थे। बक़्क़ाल से आपने फ़रमाया हुआ था जब 3 दिरहम हो जाए तो फिर हमको क़र्ज़ न देना। जब आपको कहीं से कुछ मिलता तो आप उस बक़्क़ाल का क़र्ज़ अदा कर देते थे। एक दफ़ा अपने मुसम्मम इरादा कर लिया कि क़र्ज़ अब बिल्कुल न लेंगे ।

चुनांचे आपके तवक़्कुल का यह नतीजा निकला एक रोगनी रोटी आपके मुसल्ले के नीचे से बरामद (प्राप्त) हुई। वो रोटी आपके तमाम अहले ख़ाना को काफ़ी हुई थी। बक़्क़ाल समझा कि सायद आप मुझ पर नाराज़ हो गए हैं इसलिए उसने अपनी बीवी को हज़रते ख़्वाजा रहमतुल्लाहि अलैह की ख़िदमते अक़दस में भेजा के ख़्वाजा साहब आप मुझ से क़र्ज़ क्यों नहीं लेते आपकी अहलिया मोहतरमा ने रोगनी रोटी का सारा हाल बक़्क़ाल की बीवी से कह दिया। उस रोज़ से वो काकी (रोगनी रोटी) निकलना बंद हो गया।

आप हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन रदीअल्लाहु अन्हु की औलाद से हैं लिहाज़ा आप हुसैनी सैयद हैं।

**मज़ार शरीफ़
हज़रत
कुतुबुद्दीन
बख़्तियार काकी
रहमतुल्लाहि
अलैह**

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(अल्लाह के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला)

पहला ख़त

जो कि सरकार ग़रीब नवाज़ ने अपने अव्वल ख़लीफ़ा और जा-नशीन सरकार ख़्वाजा कुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह को लिखा।

महब्बत हम राज़े अहले यक़ीन बरादरम ख़्वाजा कुतुबुद्दीन देहलवी, रब्बुल आलमीन हर काम में तुम्हारी रहनुमाई फरमाए

-फ़क़ीर मुईनुद्दीन चिश्ती की तरफ़ से

कलिमा तय्यिबा की हक़ीक़त

वाज़ेह हो (जान लो - समझ लो) कि तौहीद के चंद नुक्ते और हिदायत के चंद रुमुज़ व आसार (यानी अल्लाह के एक होने के अक़ीदे के बारे में कुछ राज़ और हिदायत के कुछ ख़ास और बारीक इशारे) इस ख़ाकसार (ग़रीब नवाज़) को बारगाहे रसूले खुदा हज़रत अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ से रूहानी फैज़ के तौर पर हासिल हुए हैं जिन पर मेरा पूरा भरोसा और यक़ीन है इसे बहुत ग़ौर से सुनो और समझ लो।

एक रोज़ का वाक़िआ है के सरकारे दो आलम ﷺ हज़रत अबू-बकर, हज़रत उसमान, हज़रत अली, हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन, हज़रत अबू हुरैरा, हज़रत अनस, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत खालिद, हज़रत बिलाल और बाकी ख़ास असहाब से ख़िताब फरमा कर रुमूज़े असरारे हक़ीक़त और हक़ाइक़ व फ़ाइक़ मारिफ़त (यानी अल्लाह त'आला की पहचान करने के बारे में गहरी हक़ीक़त और छुपे हुए राज़) बयान फरमा रहे थे लेकिन हज़रत उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) इस मजलिस में हाज़िर ना थे। अभी सरकारे दो आलम ﷺ हक़ीक़त व मारिफ़त के असरार और रुमूज़ (अल्लाह त'आला की पहचान करने के तरीके, गहरे राज़ और हक़ीक़त) बयान ही फरमा रहे थे इतने में हज़रत उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) भी इस मजलिस में हाज़िर हुए, सरकारे दो आलम ﷺ ने अपनी ज़बान को मुख़ातब करके

फरमाया "ऐ ज़बान अब बस कर दे" कुछ असहाब को तअज्जुब हुआ और उनके दिल में ये ख़याल पैदा हुआ के शायद सरकारे दो आलम ﷺ हज़रत उमर (रदीअल्लाहु अन्हु)ा ये हक़ीक़त व मारिफ़त (अल्लाह त'आला की पहचान करने के गहरे राज़) बताना नहीं चाहते। हज़रत अबू बकर और बाकी के नज़दीकी असहाब ने सरकारे दो आलम ﷺ की ख़िदमत में ये अर्ज़ किया कि येह क्या मामला है? कि अभी जो आप अल्लाह त'आला की पहचान और गहरी हक़ीक़तें बयान फरमा रहे थे वो गहरी राज़दार बातें आपने हज़रत उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) से छुपा ली।

सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया के मैंने उमर رضي الله عنه से रुमूज़े असरारे बातिनी छुपाया नहीं है बल्कि बात येह है के अगर दूध पीने वाले बच्चे को भारी खाना - गोश्त या तली हुई चीज़ें खिलाईं जाए तो वोह खाना उस छोटे बच्चे के लिये नुक़सान देने वाला बन जाता है लेकिन जब वो बच्चा जवान हो जाये तो उसे वो खाना नुक़सान नहीं पहुँचा सकतीं है।

अब सरकारे दो आलम ﷺ हज़रत उमर رضي الله عنه से उनकी बातिनी समझ बूझ की क़ाबिलियत के मुताबिक़ उनसे कुछ और अल्लाह की पहचान के राज़ ब्यान करने लगे और मक़ामे जबरूत वा मक़ामे लाहूत की हक़ीक़तें और बारीकियाँ समझाने लगे।

मारिफ़ते इलाही (अल्लाह की पहचान)

सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया " ऐ उमर رضي الله عنه जिस शख़्स को अल्लाह त'आला की पहचान हासिल हो जाती है उस को मुँह से अल्लाह- अल्लाह कहने और दोहराने की ज़रूरत नहीं रहती और जो मुँह से अल्लाह - अल्लाह कहता है तो समझ लो कि उसे अभी अल्लाह की पहचान नहीं हुई है।

हज़रत उमर رضي الله عنه ने अर्ज़ किया के हज़रत ये कैसी अल्लाह की पहचान हुई के इन्सान अपने मालिक का नाम ही न ले और उसकी याद को छोड़ दे? सरकारे दो आलम ﷺ ने जवाब दिया के कुरआन में अल्लाह त'आला ने फ़रमाया " मैं तुम्हारे साथ हूँ जहाँ कहीं भी तुम हो " इसलिए ऐ उमर رضي الله عنه जो हर वक़्त हमारे साथ हो और कभी नज़र से ओझल न हो उसका याद करना क्यों ज़रूरी है। हज़रत उमर رضي الله عنه ने अर्ज़ किया, अल्लाह त'आला हमारे साथ कहाँ है?सरकारे दो आलम ﷺ ने जवाब

फ़रमाया के "इन्सान के दिल में है"।

मोमिन का दिल

हज़रत उमर ﷺ ने अर्ज़ किया, के इन्सान का दिल कहाँ है? सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया के इन्सान के क़ल्ब में, लेकिन याद रहे-दिल दो क़िस्म का होता है एक नक़ली दिल और एक हक़ीक़ी दिल। ऐ उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) हक़ीक़ी दिल वो है जो ना दाहिनी तरफ है ना बायीं तरफ, ना ऊपर की तरफ है ना नीचे की तरफ, ना दूर है ना करीब, लेकिन इस असली दिल की पहचान कोई आसान काम नहीं है इसकी पहचान हो जाना बस कुछ उन लोगों का हिस्सा है जो हमेशा अल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर रहते है। क्योंकि पूरा और हक़ीक़त में सच्चा, अन्दर से ईमान वाला "मोमिन का क़ल्ब अल्लाह का अर्श है"।

इसलिये सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया मोमिन (ईमान वाले) के दिल में हमेशा खूफ़िया ज़िक्र (हमेशा अन्दर मौजूद ज़िक्र) क़ाइम रहता है इसलिये ईमान वाले को हमेशा की ज़िन्दगी हासिल हो जाती है और मुसलमान का दिल इस क़िस्म के ज़िक्र से नावाक़िफ़ और ग़ाफिल होता है इसलिये वो हक़ीक़त में मुर्दों में गिना जाता है।

मोमिन और मुसलमान में फ़र्क़

फ़िर हज़रत उमर ﷺ ने सुवाल किया के या रसूलल्लाह मोमिन और मुसलमान में क्या फ़र्क़ है? हुज़ूर सरकारे दो आलम ﷺ ने जवाब दिया के मोमिन आरिफे इलाही (अल्लाह को पहचान लेने वाला) होता है और उसमें ये ख़ासियत होती है के ज़्यादातर ख़ामोश और ग़मगिनी की हालत (अल्लाह की याद, ख़ौफ़ और रज़ा) में रहता है और आम मुसलमान, कोशिश करने वाला और अन्दर से सूखा होता है।

इसके बाद सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया - मोमिन वो नहीं है जो मस्जिदों मे जमा होते है और सिर्फ़ ज़ुबान से " ला इलाह इल्लल्लाह" कहते है। ऐ उमर (रदीअल्लाहु अन्हु) - ऐसे कलमा पढ़ने वाले जो कि कलमे की हक़ीक़त को ही नहीं जानते और कलमे के असली मायने से ही बेख़बर हैं वो मोमिन नहीं है। बल्कि मुनाफिक़ है। क्योंकि ज़ुबान से तो ये कलमा " ला इलाह इल्लल्लाह" का इक़रार

करते हैं लेकिन कलिमे के असली मा'ने और हक़ीक़त को नहीं जानते । इन्हें ख़ाक भी पता नहीं के कलिमे का असली मक़सद और तक़ाज़ा क्या है? कलिमा क्या चीज़ है? या'नी "ला इलाह इल्लल्लाह" इसको जुबानी तौर पर तो कह देते हैं लेकिन इनको येह ख़बर ही नहीं के कलिमे मे किस चीज़ को मना किया गया है और किस चीज़ को साबित किया गया है। ऐसा कलमा पढ़ना जिसमें शक भरा हो शिर्क है और शिर्क और शक कुफ़्र है बस ऐसे कलिमा पढ़ने वाले काफ़िर हैं क्योंकि इन्हें येह नहीं मालूम के कलिमे में किस को मना किया गया है और किस को साबित किया गया है।

कलिमा-ए-तय्यिब का असल मक़सद

हज़रत उमर ﵁ ने फिर अर्ज़ किया के फिर कलिमा-ए-तय्यिब का असली मक़सद क्या है?

जनाब सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया के कलिमे के असली मा'ने येह हैं के एक और बस एक जिसका कोई शामिल नहीं है उसके अलावा दुनिया में कोई मौजूद ही नहीं है और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा ﷺ मज़हरे खुदा (खुदा को ज़ाहिर करने वाले - खुदा जिनके ज़रीए ज़ाहिर हुआ) है! बस अल्लाह और उसके दीदार की चाहत रखने वाले को चाहिये के "अल्लाह के सिवा कोई है" इसका ख़याल भी ना आने दे और बस एक और सिर्फ़ एक अल्लाह को हर जगह मौजूद समझे इसलिये कुरआन में फ़रमाया गया है "जिधर भी देखो हर तरफ़ अल्लाह का ही ज़ाहिर होना है।

तजल्ली तेरी ज़ात की सू बा सू है ।
जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है !।

विलायत की अलामत

ऐ उमर ﵁ जब सालिक (अल्लाह को पहचानने और जानने की राह पर निकलने वाला) अपनी तमाम सिफ़ात (गुण - खासियत) को गुम और ग़ाइब समझे और सिर्फ़ अल्लाह को ही मौजूद समझे उस वक़्त वोह सालिक, वोह मुरीद कामिल हो जाता है और अपनी मंज़िल और मक़सद को पा लेता है। इस मंज़िल और मक़सद पर पहुँचकर सालिक व मुरीद की हालत येह हो जाती है के वो इस हदीस का सच्चा गवाही देने वाला बन जाता है के "जिसने अपने नफ़्स को जान लिया उसने अपने रब को जान लिया और उसकी ज़बान गूँगी हो गयी"

मतलब येह है कि आरिफ़ अल्लाह कामिल (अल्लाह को जान लेने और पहचान लेने वाले) पर (अन्दर से) ख़ामोशी और सुकून की हालत तारी हो जाती (छा जाती है) क्योंकि आहो ज़ारी और हरकाते इज़्तिराबी (तलब-तड़प-मीठा दर्द -जुदा होने का दर्द) तभी तक रहते हैं जब तक मतलूब का विसाल (क़ुर्ब) हासिल नहीं होता। जब तालिब को मतलूब मिल जाये तो ज़ाहिर सी बात है की जो आह व फ़आल, हरकाते मुज़्तरबानह तलब की हालत में उसे दामनगीर रहते थे उन सबका सिलसिला ख़त्म होकर उसकी हालत दिगरगूं हो जाए।

(जिस तरह बूंद सागर मे मिल जाती है) और बजाए आह व बुका, क़िल्क़ और इज़्तिराब के बहुत ही दिलजमई और सुकूत व सुकून हासिल हो जाये फिर तो आरिफे क़ामिल सही मा'नों में शहन्शाह हो जाता है उसे अल्लाह के सिवा ना किसी से कोई उम्मीद होती है और ना ही किसी का डर। ऐसे ही लोगों के बारे में अल्लाह त'आला ने फ़रमाया है "औलिया अल्लाह को ना किसी का ख़ौफ है ना किसी का ग़म"।

आरिफे कामिल

आरिफे क़ामिल (अल्लाह को जान लेने और पहचान लेने वाले) की हालत यादे इलाही (अल्लाह का ज़िक्र) से भी गुज़र जाती है,

ऐ उमर ﷺ यक़ीन जानो के जब तक मुरीद - सालिक, अल्लाह के सिवा किसी ग़ैर के होने का ख़याल दिल से न निकाल दे वो मंज़िले आरिफ (अल्लाह को जान लेने और पहचान लेने) की राह पर एक क़दम भी नहीं रख सकता और ना ही उसको अल्लाह त'आला की पहचान हासिल हो सकती है क्योंकि ग़ैरुल्लाह की याद करना भी एक क़िस्म की दूरी और दो होना (अलग - अलग होना) है और आरिफ़ीन के नज़दीक दूरी और दुई (दो होना) कुफ़्र है येह है, कलिमा ए तय्यिब की हक़ीक़त।

जब तक सालिक-मुरीद इस हालत और मुक़ाम तक ना पहुँच जाए उस वक़्त तक सालिक-मुरीद सच्चा अल्लाह को एक जानने वाला नहीं बन सकता और अपने "ला इलाहा इल्लल्लाह" का दावा करने में झूठा है। (उर्दू मुतर्जिम)

नमाज़ की हक़ीक़त

हक़ीक़ी नमाज़ के बारे में सरकारे दो आलम नूरे मुजस्सम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया ऐ उमर "ला सलवात इल्ला बी हुज़ूरी क़ल्ब" (क़ल्ब को हाज़िर किए बग़ैर नमाज़ नहीं होती) नमाज़े हक़ीक़ी से मोमिने कामिल और आरिफ़े इलाही को हुज़ूरी दायमी (हमेशा के लिए) हासिल होती है).

नफ़्सानी नमाज़ और रहमानी नमाज़

नीज़ सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया नमाज़ दो क़िस्म की होती है एक नमाज़ औलमा व फुक़हा ए ज़ाहिरी और ज़ाहिदीने खुश्क (यानी ज़ाहिरी उलूम की मालूमात रखने वाले और इस्लामी क़ानून के जानने वाले और बग़ैर इख़लास के कोशिश करने वाले) की होती है जो सिर्फ़ क़ौल व फ़ेअल (दिल लगाए बग़ैर सिर्फ ज़बान और हाथ-पाँव हिलाने) तक ही होती है और इससे विसाले इलाही (अल्लाह का क़ुर्ब) हासिल नहीं होता यही वजह है के इनकी रसाई (ऐसी नमाज़ की पहुँच) सिर्फ आलमे मलकूते नफ़्सानी तक महदूद रहती है।

दूसरी नमाज़ अम्बिया और अल्लाह के वलियों और खुलफ़ा की है जो बि हुज़ूरिल क़ल्ब से हासिल की जाती है उसका समरह (फल) विसाले इलाही है और इसकी रसाई आलमे जबरुत रहमानी तक महदूद होती है।

ऐ उमर हक़ीक़ी नमाज़ दरअसल यही 'रहमानी नमाज़ है" वरना जो अवामुन्नास (आम लोग)ज़ाहिरी तौर पर बिला हुज़ूरी ए क़ल्ब (दिल को हाज़िर किये बग़ैर) नमाज़ अदा करते है ये नमाज़ नफ़्सानी (यानी बग़ैर तक़्वा व अखलास वालों की) है रहमानी नमाज़ नहीं है।

बे हक़ीक़त नमाज़

सरकार ए दो आलम ने फ़रमाया (तर्जुमा) औलमा ज़ाहिर परस्त (सिर्फ़ ज़ाहिर को संवारने वाले) और सूफ़िया रियाकार खूब जुब्बा दस्तार बांध कर ज़ाहिरी शान व शौक़त और ठाठ बना कर महज़ रियाकारी की नमाज़ पढ़ते हैं उनके नफ़्स मग़रूरी और खुदपसन्दी कि कसरे मंज़िलत में गिरे हुए होते हैं इनकी नमाज़ क्या हक़ीक़त रखती है। क्योंकि येह लोग नफ़्स के बंदे हैं और नफ़्सानी इंसान दरअसल शैतान बक़ालीब इंसान होता है और शैतान बिल इत्तेफ़ाक़ काफ़िर और गुमराह है पस

नतीजा येह बरामद हुआ कि ऐसे लोग दर हक़ीक़त गुमराह और काफ़िर हैं, उन्हें चाहिए कि किसी मुर्शिदे कामिल (पीरे तरीक़त) की सोहबत में रह कर अपने दिल को ग़ुरूरे नफ़्सानियत के ख़स व खसाक से पाक व साफ़ करे और मारिफ़ते इलाही से मामूर व आबाद बनाए ताकि वो सही मानों में इंसान बन जाए और गुमरही से निकलकर राहे रास्त पर आ जाए जब ही उनकी नमाज़ हक़ीक़ी नमाज़ होगी और यही नमाज़ बारगाहे इलाही में क़ुबूलियत के क़ाबिल होगी और ख़ुश क़िस्मती से ऐसा हक़ीक़ी नमाज़ी हज़ारों लाखों में एकाद (1 या 2) भी मिल जाये तो उसकी ख़िदमत, सोहबत कसीरे अहमर से बदर्जह बेहतर है। येह गुमराह दरअसल बुत परस्त हैं और तअज्जुब है के येह अपनी बुत परस्ती पर नाज़ां भी (फ़ख़्र करते) हैं। लोग भी अजीब कोर बातिन और नादान हैं जो ऐसे रियाकारों को नमाज़ी शुमार करते हैं। ऐसी बे हक़ीक़त नमाज़ से क्या फ़ाएदा।

कितनी ग़ालिब है दिल में दुनिया की मुहब्बत
नेकी भी जल्दी में करते है गुनाह करने के लिए

हक़ीक़ी (असल) नमाज़ी कौन?

हदीसे कुदसी (अल्लाह का फ़रमान) है कि अंबिया और औलिया हमेशा हुज़ूरी ए क़ल्ब से नमाज़ पढ़ते हैं (यानी दिल को हाज़िर करके)।

सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया - अंबिया और औलिया की नमाज़ दर हक़ीक़त वोह नमाज़ होती है के जब वो नमाज़ में खड़े होते हैं तो बल्कि हर वक़्त ही उनकी हवासे ख़मसा' (सारी तवज्जोह) ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा दूसरों) से बंद हो जाते हैं और उनका एक एक सांस यादे इलाही में गुज़रता है वोह अपने एक एक सांस का ख़याल व शुमार रखते हैं कि कहीं ग़फ़लत में न गुज़र जाए। यही लोग दरअसल नमाज़ी हैं। (हवासे ख़मसा यानी पांचों इन्द्रियां, देखना, सुनना, सूंघना, बोलना और छूना जिससे मुराद है सारी तवज्जोह)

ऐ उमर नमाज़े हक़ीक़ी ही रहमानी नमाज़ है उसी नमाज़ से परवरदिगारे आलम का विसाल (कुर्ब) होता है।

हक़ीक़ी नमाज़ का हुसूल (प्राप्ति)

ऐ उमर अंबिया अलैहिमुस्सलाम और औलिया रहमतुल्लाह अलैहिमुर्रिदवान हमेशा ज़िक्रे ख़फ़ी (दिल ही दिल मे अल्लाह की याद) में रहते है।

नबी अलैहिस्सलातुवस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया (तर्जुमा) ज़बानी ज़िक्र गोया लक़लक़ा है और दिली ज़िक्र (नक़ली दिल का ज़िक्र) एक क़िस्म का वसवसा है और रूहानी ज़िक्र मुशाहदहे इलाही का मौजिब है और ज़िक्रे ख़फ़ी हमेशा हुआ करता है।

ऐ उमर ज़िक्रे ख़फ़ी और नमाज़े हक़ीक़ी तर्के वजूद है आबिद की नमाज़ सज्दा और सुजूद पर मबनी (टिकी) है ।

(यानी खुदपसन्दी, रियाकारी और दुनियांदारी को दिल से निकाल देने वालों के ज़िक्र और नमाज़ हक़ीक़ी है- हिंदी मुतर्जिम)

Related

हक़ीक़ी नमाज़ आसान नहीं

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जमा कंज़ुल ईमान) : **बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर (नहीं) जो दिल से मेरी तरफ़ झुकते हैं।** (सूरह बक़रह, आयत नं. 45)

वोह नमाज़ी जो मोमिन नहीं

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रदीअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आयेगा कि वो मस्जिदों में इकट्ठे होंगे और बा जमाअत नमाज़ पढ़ेंगे लेकिन उनमें मोमिन न होगा। (इब्ने अबी शैबा 6/163-हदीस 30355, (इमाम हाकिम-अल इमाम मुस्तदरक- 4/489-हदीस-8365)

असल नेकी ईमान और ईमान की खसलतें हैं

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जमा कंज़ुल ईमान) : **''कुछ असल नेकी येह नहीं कि मुँह मशरिक़ या मग़रिब की तरफ़ करो हाँ असल नेकी येह कि ईमान लायें अल्लाह और कयामत और फरिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर और अल्लाह की महब्बत में अपना प्यारा माल खर्च करे रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गरदने छुड़ाने में और नमाज़ कायम रखें और ज़कात दें और जब अहद करें तो अपना कौल (वादा) पूरा करने वाले और मुसीबत, सख्ती में और जिहाद के वक़्त सब्र वाले यही हैं जिन्होंने अपनी बात सच्ची की और यही परहेज़गार है''।** (सूरह बक़रह, आयत नं. 177)

तफ्सीर : इस आयत की मानी ये हैं कि सिर्फ क़िबले की ओर मुंह कर लेना (नमाज की शक्ल में) अस्ल नेकी नहीं जब तक अक़ीदा दुरूस्त न हों और दिल सच्ची महब्बत के साथ क़िबले के रब की तरफ़ मुतवज्जह न हो. (खज़ाइनुल इरफान)

नोट - ख्याल रहे Related आयत व रिवायत इस किताब की तहरीर नहीं , हिन्दी मुतर्जिम की तरफ से है

रोज़े की हक़ीक़त

ऐ उमर रोज़े की हक़ीक़ी तारीफ़ येह है के इंसान अपने दिल को तमाम दीनी और दुनियवी ख़्वाहिशात मसलन (जन्न्त-हूर-और आराम और दुनियवी मालो दौलत, मकान, गाड़ी, बंगला , सोना-चाँदी वग़ैरह) से बन्द रखे क्योंकि ये दोनों क़िस्म की ख्वाहिशें अल्लाह त'आला और बन्दे के बीच में परदा (रूकावट) है ऐसी चाहत के रहते हुए इन्सान अपने हक़ीक़ी मअबूद अल्लाह त'आला से नहीं मिल सकता और दुनिया की चीज़ों की ख़्वाहिशात रखना तो सरासर शिर्क है।

ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा दूसरे) की तरफ ख़याल करना, क़ियामत का खौफ़, जन्नत का होश और आख़रित की फ़िक्र येह सब हक़ीक़ी रोज़े को ख़त्म कर देने वाली, और तोड़ देने वाली है। हक़ीक़ी रोज़ा तब ही सही रह सकता है जब कि इन्सान अल्लाह के सिवा सब चीज़ों को अपने दिल से निकाल दे यानी अल्लाह के सिवा उसे कोई याद न रहे और हर क़िस्म की उम्मीद-लालच-चाहत और हर क़िस्म के डर को अपने अन्दर से निकाल दे।

नोट :- वाज़ेह रहे के हक़ीक़ी रोज़े से मुराद उन लोगों का रोज़ा है जो अल्लाह की ज़ात में फ़ना होकर बाक़ी बिल्लाह हो जाते हैं, आम मोमिनीन का रोज़ा मुराद नहीं। और अल्लाह फरमाता है, "वोह जो ईमान लाए और ताक़त भर अच्छे काम किए, हम किसी पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं डालते, वोह जन्नत वाले हैं उन्हें उसमें हमेशा रहना" (सूरह आराफ़ आयत न. 42)

सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया "अल्लाह त'आला के दीदार और मुलाक़ात के अलावा मुझे किसी भी और चीज़ से मतलब नहीं है हक़ीक़ी रोज़े का खोलना (इफ़्तार) सिर्फ अल्लाह का दीदार है"।

ऐ उमर हक़ीक़ी रोज़े की इब्तिदा (शुरूआत) दीदारे इलाही से होती है और इंतेहा (ख़त्म होना) भी दीदारे इलाही पर होती है।

ऐ उमर رضـــي الله عنه रोज़ा ए हक़ीक़ी की इब्तेदा और इंतेहा बख़ूबी ज़ेहन नशीन (ज़ेहन में बैठा लेना) कर लेनी चाहिए यानी जानना चाहिए की हक़ीक़ी रोज़ा किस चीज़ से रखा जाता है और किस चीज़ से इफ्तार किया जाता है।

इसलिये येह समझ लेना चाहिये के हक़ीक़ी रोज़े की शुरूआत येह है के इन्सान को अपनी अन्दरूनी क़ाबिलियत और हालत और कैफ़ियत के मुताबिक़ अल्लाह त'आला की पहचान हासिल कर लेनी चाहिये और रोज़े का खोलना ये है के उसे

अल्लाह त'आला का दीदार हासिल हो। सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया के हक़ीक़त का रोज़ा रखने वाले के लिये दो ख़ुशियाँ हैं एक रोज़ा खोलते वक़्त और दूसरी अल्लाह त'आला के दीदार के वक़्त।

ऐ उमर अव्वाम (आम लोगों) के रोज़े में पहले रोज़ा रखना है और आख़िर मे रोज़े का खोलना, लेकिन हक़ीक़ी रोज़े में पहले रोज़े का खोलना है और आख़िर मे रोज़ा रखना है। देखो अल्लाह की याद में डूबकर सिर्फ अल्लाह को चाहने वाले, और अल्लाह की तरफ़ सफर करने वाले हमेशा ही रोज़े में रहते हैं वोह किसी भी वक़्त रोज़ा नहीं खोलते क्योंकि हक़ीक़ी रोज़े के लिये येह शर्त नहीं है के रोज़ा खोला जाए या कभी रोज़ा रखो और कभी रोज़ा खोलो हक़ीक़त का रोज़ा रखने वाले तो हमेशा ही रोज़े से रहते है।

ऐ उमर तमाम आम लोग रोज़ा रखते है के जिसमें खाने-पीने और औरत से मिलने से बचना होता है येह हक़ीक़त का रोज़ा नहीं बल्कि मजाज़ी (रसमी) रोज़ा है। इसके येह माअने हैं के अल्लाह के राज़ इनको नहीं मिल पाते वोह बाहरी दुनिया की खूबसूरती में घिरे हुए हैं और हक़ीक़त का इन्हें कुछ पता नहीं लेकिन इस मजाज़ी रोज़े में ग़ैरुल्लाह तर्क नहीं होता और इन्सान में हर क़िस्म का नफ्सानी और इंसानी ख़तरा का डर होता है। ऐसे रोज़ेदारों का क़ौल व फ़ेअल (बोलना और करना) सब ग़ैरुल्लाह के लिए है।

ऐसा मजाज़ी रोज़ा कभी भी रहमानी रोज़ा नहीं हो सकता। ऐसे मजाज़ी रोज़े से इसके अलावा कोई फ़ाएदा नहीं होता के बस इन्सान, ग़रीबों - मिस्कीनों की भूख का अहसास कर सके और उनकी मदद कर सके और इसके अलावा इस ज़ाहिरी और मजाज़ी रोज़े से और क्या फ़ाएदा हो सकता है?

सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया "बिना मुर्शिद का इन्सान, बिना दीन का इन्सान होता है और बे-दीन इन्सान अल्लाह की पहचान से नावाक़िफ़ होता है इस का किसी भी हक़ गिरोह से ताल्लुक़ नहीं होता और उस का कोई हमदर्द या ग़म दूर करने वाला ना हो वो हमेशा-ग़फ़लत, बेहोशी और शैतान के पंजे में रहता है"

हदीस : (तर्जमा) मेरे औलिया मेरी कुबा के नीचे हैं, उनके मर्तबे को मैं ही जानता हूं और कोई नहीं जान सकता।

ऐ उमर सालिकाने ग़ैर मजज़ूब सोहबते कामिल ए मुर्शिद के बग़ैर मारिफ़ते

इलाही (अल्लाह की पहचान) हासिल नहीं कर सकते और न ही इस्लाहे बातिनी के बग़ैर आलमे जबरुत तक उनकी पहुँच हो सकती है। वोह आलमे नासूत और मलकूत में ही भटकते रहते हैं। येह लोग नफ़्स परस्त और तालिबे शोहरत हैं।

ऐ उमर जो औलमा, फुक़हा और सालिकीने ग़ैर मजज़ूब हैं और वोह किसी मुर्शिदे कामिल (हक़ीक़ी पीर यानी हक़ की तरफ़ ले जाने वाले पीर) के फ़ैज़ सोहबत से मुस्तफीज़ नहीं हुए वोह जज़्बा ए असरारे ईलाही से बिल्कुल बेख़बर हैं। येह लोग दुनियवी ज़ेब व जीनत के पीछे मारे मारे फिरते हैं। गोया वोह जुब्बा और दस्तार और सूफ़िया ए किबार (बड़े सूफ़ी) के जामह में मलबूस होते हैं लेकिन दर हक़ीक़त उनकी बातिनी हालत येह होती है कि हिर्स, हवस दुनियवी और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी में गिरफ़्तार होते हैं। उन का मक़सूद उस जामा ए फ़क़ीरी से ख़ुदा परस्ती नहीं होता बल्कि वोह सरासर तालिबे जाह और माल होते हैं। इनका कलमा और नमाज़-रोज़ा क्या हक़ीक़त रखता है।

जो सख़्श मोहक़्क़िक़ सालिकों के ज़ुमरे में दाख़िल हो जाए और मारिफ़ते इलाही में पाए तकमील तक पहुँच जाए उस पर फ़र्ज और लाज़िम हो जाता है की वोह अपनी हस्ती और ख़ुदी को यकसर मिटा दे।

मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे
कि दाना ख़ाक में मिल कर गुल व गुलज़ार होता है

जो लोग अपनी ख़ुदी (यानी नफ़्सानी खस्लतों जैसे मैं, मेरा) को नहीं मिटाते ख़्वाह वोह सूफ़ियाना लिबास में मलबूस हों लेकिन वोह मंज़िले इरफ़ान में क़दम नहीं रख सकते। इंसान मारिफ़ते इलाही की मंज़िल तक उसी वक़्त पहुँच सकता है जब तक वोह अपनी ख़ुदी और हस्ती यकसर न फ़रामोश (पूरी तरह भूल जाना) कर दे और महज़ ज़ाते इलाही हर वक़्त मतलूब हो।

Related

हदीस 1 : (तर्जमा) **अगर कोई शख्स झुट बोलना और दगा बाज़ी करना न छोड़े तो अल्लाह को इसकी कोई ज़रूरत नही की वो खाना पीना छोड़ दे यानी रोज़ा रखे।**

(बुखारी शरीफ)

हदीस 2 : (तर्जमा) **बहुत से रोज़ेदार ऐसे है जिन्हें उनके रोज़े से सिवाय भूख और प्यास के कुछ हासिल नहीं होता ।** (सिर्रुल असरार, बाब 17, पेज 100)

नोट - ख्याल रहे Related आयत व रिवायत इस किताब की तहरीर नहीं , हिन्दी मुतर्जिम की तरफ से है

जक़ात की हक़ीक़त

ऐ उमर सुनों अज़ रुए शरअ (शरीअत में) 200 दीनार में से 5 दीनार ज़काात अदा करना फ़र्ज है और अहले तरीक़त के नज़दीक 200 में से 5 दीनार अपने पास रखने चाहिए बाक़ी सब के सब निरे ज़कात में सर्फ़ कर देना लाज़िम है। लेकिन याद रहे ज़कात आज़ादों पर फ़र्ज़ है ग़ुलाम पर फ़र्ज नहीं है जब तक बंदा नफ़्स की बंदगी से निजात न पाए उस वक़्त तक आज़ादों के ज़ुमरे में दाख़िल नहीं हो सकता है और जब आज़ाद न हुआ तो उस पर ज़कात क्यों कर फ़र्ज़ हो सकती है।

बातिनी जक़ात

नफ़्स के बंदों को सबसे पहले बन्दगी ए नफ़्स से आज़ादी हासिल करनी चाहिए ताकि वोह हक़ीक़ी ज़कात अदा करने के क़ाबिल बन जाए।

नीज़ ज़कात आक़िल और बालिग़ पर फ़र्ज़ है दीवाने और नाबालिग़ पर फ़र्ज़ नहीं है इसलिए जिस पर ग़फ़लत व नफ़्सानियत का देव (भूत) सवार हो वोह हमातन नफ़्स और शैतान के पंजे में गिरफ़्तार है। आरिफाने इलाही के नज़दीक वोह आक़िल व बालिग़ नहीं हो सकता बल्कि वोह एक शीरख़्वार (दूध पीते) बच्चे की तरह है और अहले मारिफ़त के नज़दीक ना क़ाबिल समझा जाता है।

जो क़ाबिल है ही नहीं उस पर हक़ीक़ी ज़कात क्यों कर फ़र्ज़ होगी बस सबसे पहले येह ज़रूरी है इन्सान नफ़्स की बे शऊरी से निजात हासिल करे ताकि वह मारिफ़ते इलाही की आज़ादी और अक़्ल से सरफ़राज़ होकर हक़ीक़ी ज़कात अदा करने के क़ाबिल हो जाए।

ज़ाहिरी ज़कात जो शरअन दुनियवी माल पर फ़र्ज़ है उसमें महज़ येह हिकमत है कि अमीर लोग ज़कात के बहाने से ग़रीब और मिस्कीन लोगों की मदद कर सकें और ग़रीब और मिस्कीन अपनी ज़िंदगी गुज़ारने का सही से इन्तिज़ाम कर सकें।

इरफ़ान की जक़ात

ऐ उमर गंजे हक़ीक़ी (हक़ का खज़ाना) की बजुज़ आरिफ़ाने इलाही के किसी को ख़बर नहीं है। गंज ए हक़ीक़ी दरअसल सिर्रे रुबूबियत (एक हक़ीक़ी अल्लाह का राज़) है और आरिफ़ीन के दिल इस सिर्रे रबूबियत के गंजीने (भण्डार) होते हैं। उरफ़ा (अल्लाह को पहचानने वालों) पर फ़र्ज़ है कि वोह अपने गंज ए हक़ीक़ी (राज़े हक़ के

गोदाम से बातिनी इल्म) में से असरारे इलाही (राहे हक़ के भण्डार से बातिनी इल्म) की ज़कात गुमराहों और नादानों को अता फ़रमा दे और गुम गस्तगाने बादा ए ज़लालत की रहनुमाई फरमा दें क्योंकि मुस्तहिक़ (हक़दार) को उसका हक़ देना ऐन ज़कात है।

क़िबला-ए-दिल काबा-ए-जाँ और है
सज्दा-गाह-ए-अहल-ए-इरफ़ाँ और है

हो के खुश कटवाते हैं अपनी गर्दन
आशिक़ों की ईद-ए-क़ुर्बां और है

रोज़-ओ-शब याँ एक सी है रौशनी
दिल के दाग़ों का चराग़ाँ और है

ख़ाल दिखलाती है फूलों की बहार
बुलबुलों अपना गुलिस्ताँ और है

क़ैद में आराम, आज़ादी वबाल
हम गिरफ़्तारों की ज़िंदगी और है

बहर-ए-उल्फ़त में नहीं कश्ती का काम
नूह से कह दो ये तूफ़ाँ और है

किस को अंदेशा है बर्क़ ओ सैल से
अपना ख़र्मिन का निगहबाँ और है

दर्द वो दिल में वो सीने पर है दाग़
जिस का मरहम जिस का दरमाँ और है

काबा-रू मेहराब-ए-अबरू ऐ 'अमीर'
अपनी ताअ'त अपना ईमाँ और है

हज्ज की हक़ीक़त

असली ख़ाना-ए-काबा इन्सान का दिल है

ऐ उमर यक़ीन जानो के ख़ाना-ए-काबा इन्सान का दिल है (यहाँ दिल से मुराद क़ल्ब है वोह नहीं जो सीने में बायीं तरफ़ धड़कता है - मुतर्जिम) चुनांचे फ़रमाने नबवी ﷺ हैः इंसान का दिल दरअसल ख़ाना ए काबा है बल्कि फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ हैः मोमिन का दिल अर्शे इलाही है पस (इसीलिये) काबा दिल का हज्ज करना चाहिए।

हज़रत उमर ﷺ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ﷺ काबा दिल (यानी क़ल्ब) का हज्ज किस तरह करना चाहिए? सरकारे दो आलम ने (मिसाल के तौर पर) फ़रमाया के इन्सान का वजूद ब मंज़िला एक चार दीवारी का है अगर इस चार दीवारी में से शक, वहम और ग़ैरुल्लाह का जो पर्दा है दूर कर दिया जाए तो दिल के सेहन में ख़ुदा का जलवा नज़र आएगा हज्जे काबा का यही मक़सद है।

नीज़ ऐसा हक़ीक़ी हज्ज करने का येह भी मक़सूद है कि इंसान अपनी ख़ुद व हस्ती को इस तरह मिटा दे कि हस्ती का ज़र्रा भर भी बाक़ी न रहे हत्ता की ज़ाहिर व बातिन यकसाँ पाकीज़ा हो जाएं और दिल सिफ़ाते इलाही से मुत्तसिफ़ हो जाए (यानी फ़नाफ़िल्लाह हो जाए)।

फ़नाफ़िल्लाह

हज़रत उमर ﷺ ने अर्ज़ किया के हुज़ूर अपनी हस्ती (ख़ुद) को फ़ना क्योंकर (कैसे) हासिल हो सकती है?

सरकारे दो आलम ﷺ ने (जवाब) फ़रमाया हक़ीक़ी महबूब यानी अल्लाह त'आला पर आशिक़ होने से।

जो इन्सान अल्लाह का आशिक़ हो गया वो फ़नाफ़िल्लाह हो गया और जो फ़नाफ़िल्लाह हो गया वोह अल्लाह त'आला का मज़हर हो गया (यानी हक़ का जल्वा दिखाने वाला- हिंदी मुतरज्जिम)

फिर हज़रत उमर ने सुवाल किया के हुज़ूर ﷺ दिल क़ल्ब को ख़ाना ए काबा

और अल्लाह का अर्श क्यों क़रार दिया गया है?

सरकारे दो आलम ﷺ ने जवाब दिया के अल्लाह त'आला फ़रमाता है

وَفِي أَنفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ

"अल्लाह की निशानियाँ खुद तुम्हारे अन्दर है तो क्या तुम्हें सूझता नहीं"

(सूरह दारियात, आयत नं. 21)

ऐ उमर रहने की जगह को घर कहते हैं क्यूंकि ख़ुदा त'आला दिल में रहता है इसलिये अल्लाह त'आला के रहने की जगह को अल्लाह का अर्श क़रार दिया।

फिर हज़रत उमर رضي الله عنه ने सवाल किया के या रसूलल्लाह ﷺ इस ख़ाक के पुतले में (यानि जिस्म में) बोलने वाला, सुनने वाला देखने वाला कौन है? और कैसा है?

पैग़म्बरे खुदा ने फ़रमाया के बस वो ही ख़ुदा बोलने वाला है वो ही सुनने वाला है वो ही देखने वाला है।

हज़रत उमर رضي الله عنه ने पूछा कि हज़रत काबा ए दिल (दिल जो हकीक़त का काबा है) उसका हज्ज कौन अदा करता है?

सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया के ख़ुद, जाते ख़ुदा वंदी (ख़ुदा की ज़ात) यानी जब बन्दगी नफ़्स का पर्दा दूर कर देता है और म'अबद व म'अबूद के दरमियान कोई पर्दा बाक़ी नहीं रहता तो वोह सिफ़ाते इलाही से मुत्तसिफ़ हो जाता है और उसके दिल मे ज़ाते इलाही की समाई हो जाती है। ख़ुदा त'आला का बंदे के दिल में समाई (समा जाना) काबा दिल का हज्ज (हक़ीक़ी हज्ज) है।

हज़रत उमर رضي الله عنه ने फिर सुवाल किया के हुज़ूर जब सब कुछ उस ज़ाते मुक़द्दस का ज़हूर (ज़ाहिर होना) है तो फिर येह रहनुमाई किसको और क्यूंकर है?

सरकारे दो आलम ﷺ फ़रमाया के वो ख़ुद ही रहनुमा (राह दिखाने वाला) है और ख़ुद अपनी ही रहनुमाई करता है।

हज़रत उमर رضي الله عنه ने अर्ज़ किया, हुज़ूर ﷺ फिर ये गोना गूँ नक़्श व निगार (यानी ये दुनिया का इतना रंग बिरंगा होना, ये इतने नज़ारे) क्यों है?

सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया के रहनुमाई की मिसाल सौदागरी की सी है कि जिस चीज़ का कोई गाहक हो सौदागर उसको वही चीज़ देता है। गेहूँ के ख़रीददार को जौ हरगिज़ नहीं दिये जाते और न ही जौ के ख़रीददार को गेहूँ दिये जाते हैं।

ऐ उमर पैग़म्बरों की मिसाल ऐसी है जैसे अतिब्बा यानी जिस तरह तबीब मरीज़ की तबीयत और मर्ज़ के मुआफ़िक़ दवा देता है और उसे मुआफ़िक़ तबा दवा के उस मरीज़ को शिफा हासिल होती है। उसी तरह पैग़म्बर भी रूहानी ईमानदार को उसकी बातिनी इस्तेदाद (क़ाबिलियत) और रूहानी मर्ज़ के मुआफ़िक़ दवा ए मारिफ़त अता फ़रमाते हैं। जिसके बदौलत मरीज़ रूहानी शिफाए कुल्ली पाकर आरिफ़े इलाही बन जाता है।

मुसलमानों में गिरोह

ऐ उमर सालिकाने तरीक़त 4 गिरोह में मुनक़सिम हैं। और इन चार गिरोह में से बलिहाज़े मरातिब व इस्तेदाद ए बातिनी ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है।

पहला गिरोह अवामुल आलम में आम मुसलमानों का है येह लोग अरबाबे ज़ाहिर कहलाते हैं और राहे शरीअत पर चलने वाले हैं। इश्के इलाही की 4 सीढ़ियों में से पहली सीढ़ी पर अहले शरह ग़ामज़न होते हैं। लेकिन अगर इसी सीढ़ी पर रहें तो मारिफ़ते इलाही की अगली सीढ़ियों पर चलने की कोशिश न करें हत्ता (यहां तक) की उनकी उम्र ख़त्म हो जाए तो येह लोग दीन व दुनिया से महरूम और ज़ाहिर परस्त हो कर मर जाते हैं। येह गिरोह अहले शरीयत कहलाता है।

न खुदा ही मिला, ना विसाले सनम

ना इधर (दुनिया) के रहे ,ना उधर (आख़िरत) के रहे

दूसरा गिरोह वोह अवामुल ख़ास का है। उन लोगों में दोनों पहलू पाए जाते हैं अवाम का भी और ख़वास का भी। येह गिरोह रूहानियत की तरफ़ मुतवज्जह तो होता है लेकिन चूंके रुमुज़े बातिनी (छुपे हुए इशारों) से बे बहरा होते हैं।

कभी दुनिया के तालिब होते हैं कभी दीन के तालिब लिहाज़ा उनकी बातिनी आंखें नूरे बातिनी से पूरे तौर पर मुनव्वर (रौशन) नहीं होतीं।

तीसरा गिरोह ख़ालिसुल ख़ास का है उन्हें अहले मारिफ़त बोलते हैं।

रसूल ﷺ ने इरशाद फरमाया ऐ उमर हिदायते रहनुमाई तालिब (चाहने वालों) की इस्तेदाद (क़ाबिलियत) और जिंस (दर्जा) के मुताबिक हुआ करती है। असरारे इलाही (अल्लाह की राज़) की ने'अमते उज़मा (बड़ी ने'अमत) ना अहल (ना क़ाबिल) अवामुन्नास को नहीं दी जाती क्यूंकि उनको ऐसी ने'अमत दे देना इस ने'अमत कि ना क़द्री है।

नीज़ चूंकि वोह उस ने'अमत के मुतहम्मिल नहीं हो सकते। लिहाज़ा उनके गुमराह होने का अंदेशा है।

फिर हज़रत उमर رضی اللہ عنہ ने सुवाल किया के ज़ाते रहमान क्या है और दीगर अशिया क्या हैं?

हुज़ूर सरवरे काएनात ﷺ ने जवाब दिया कि तमाम अशिया (चीज़ें) मज़हरे इलाही हैं दर हकीक़त सब एक ही हैं। ज़हूर की सिफ़ात मुख़्तलिफ़ हैं जैसा कि मतलब एक होता है और उसको मुख़्तलिफ इबारतों से अदा किया जाता है इस तरह ज़ात एक ही है लेकिन उसके मज़ाहिर मुख़्तलिफ़ (अलग-अलग) हैं।

इरशादे खुदावंदी है यानी अल्लाह त'आला का हर चीज़ पर इहाता है लेकिन इंसान को दीगर तमाम मख़लूक़ात पर शर्फ़ व बुज़ुर्गी हासिल है यानी ख़ुदा त'आला ने आदम को अपनी सूरत पर पैदा किया।

हज़रत उमर رضی اللہ عنہ ने पूछा के हज़रत ﷺ जब इंसान अशरफुल मख़लूक़ ठहरा तो फिर उसमें ख़ास व आम और काफ़िर, मुसलमान होने का क्या बाइस (वजह)

फ़रमाया इरशादे बारी त'आला है कि "हमनें बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है" नीज़ इरशाद है "हर शख़्स मौत का मज़ा चखने वाला है" मौत दरअसल उस हदीस की मिसदाक़ होनी चाहिए कि "मौत एक पल है" जिसको तालिबे मौला उबूर करके वासिले इलाही हो जाता है।

ए उमर पांच बिनाए इस्लाम (यानी तौहीद, नमाज़, रोज़ा, हज्ज, ज़कात) की हक़ीक़त जो मोमिनियत का दर्जा रखती हैं मुफ़स्सल बयान कर दिया है फ़िलहाल तुम्हारे लिए काफ़ी है जब तू उससे आगे इंतहा ए कमाल की तरफ़ बढ़ना चाहेगा तो

जमा सिफ़ात व असरार खुद तुम्हारे अंदर मौजूद हैं क्यूंकि **"मन आ़राफ़ा नफ़्सा फक़द आ़राफ़ा रब्बह"** जिसने अपने नफ़्स (मैं/स्वार्थी) को पहचान लिया उसने अपने रब को पहचाना।

ऐ मेरे हमराज़ कुतुबुद्दीन येह नुक्ते पोशीदा और राज़ मख़्फ़ी थे जो हुज़ूर सरवरे काएनात ﷺ ने अपने ख़लीफ़ा अपने हमराज़ हज़रत उमर को तालीम फरमाए थे तुमको लिख दिए हैं। हमें उम्मीद है कि तुम इन निकात पर ऐतबार और इक़रार करोगे हमें। कज फ़हम यानी औलमा ए ज़ाहिरी से कुछ सरोकार नहीं। उनका इलाज अल्लाह त'आला ही कर सकता है क्यूंकि सब कुछ अल्लाह त'आला ही के क़ब्ज़े में है। अल्लाह त'आला के हुक्म के बग़ैर कोई चीज़ हरकत नहीं कर सकती। यही हर मुसलमान का अक़ीदा है और इसी पर ईमान है।

Related

मोमिन की इज़्ज़त का'बे से ज़्यादा है

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदीअल्लाहु त'आला अन्हु फरमाते हैं मैंने हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा कि काबा मुअज़्ज़मा का तवाफ़ करते और फ़रमाते: ऐ काबा तू कितना पाकीज़ा है और तेरी खुशबू कितनी पाकीज़ा है, तू कैसा अज़ीम है और तेरी हुर्मत कितनी बड़ी है, क़सम उसकी जिसके कब्ज़-ए-कुदरत में मुहम्मद की जान है बेशक अल्लाह तआला के नज़दीक मोमिन की इज़्ज़त तेरी इज़्ज़त से बहुत ज़्यादा है। (फ़ैज़ाने आला हज़रत, पेज न. 79)

जब मोमिन की इज़्जत का'बे की इज़्ज़त से बहुत ज्याता है तो
हमारे नबी ﷺ जिसकी मोहब्बत ईमान की जान है और
जो ईमान वालों का इमाम है उसकी इज़्ज़त का आलम क्या होगा

हाजियो आओ, शहंशाह का रौज़ा देखो
का'बा तो देख चुके का'बे का का'बा देखो

आब-ए-ज़मज़म तो पिया, ख़ूब बुझाईं प्यासें
आओ, जूद-ए-शह-ए-कौसर का भी दरिया देखो

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान

नोट - ख्याल रहे Related आयत व रिवायत इस किताब की तहरीर नहीं, हिन्दी मुतर्जिम की तरफ से है

हिस्सा दोम

पहला असरार (राज़)

मक्तूब 1

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

सलामे मस्नूना के बाद वाज़ेह हो कि जो असरारे इलाही के चंद एक नुक्ते मैं लिखता हूं येह अपने सच्चे मुरीदों और हक़ के तालिबों (अल्लाह त'आला की सच्ची तलब और चाहत रखते हों उन) को समझा देना ताकि वोह ग़लती में ना पड़ें।

अज़ीज़े मन! (मेरे दोस्त) जिसने अल्लाह को पहचान लिया है वोह कभी सुवाल, आरज़ू या ख़्वाहिश नहीं करता और जिसने अभी तक नहीं पहचाना वोह इनकी (आरिफ़ों की) बात को नहीं समझ सकता। दूसरा येह के हिर्स व हवा को तर्क करो जिसने हिर्स व हवा को तर्क किया उसने मक़सूद हासिल कर लिया।

चुनांचे ऐसे इन्सान के बारे में अल्लाह त'आला ने फ़रमाया "वो जिसने अपने नफ़्स को ख्वाहिशात से रोक रखा, उसका ठिकाना जन्नत है"

जिस दिल को अल्लाह त'आला ने अपनी तरफ़ से फेर दिया है उसे कसरते शहवात (बहुत सारी इच्छाओं) के कफ़न में लपेट कर ज़मीन में दफन कर दिया है।

एक दिन सुल्तानुल आरिफ़ीन हज़रत ख़्वाजा बायज़ीद रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया के मैंने एक रात अल्लाह त'आला को ख्वाब में देखा। मुझसे पूछा गया बायज़ीद क्या चाहते हो? मैंने कहा जो तू चाहता है। जवाब मिला के अच्छा जिस तरह तू मेरा है उसी तरह मै तेरा हूँ।

पस अगर तसव्वुफ़ की माहियत से वाकिफ होना चाहते हो तो अपने पर आसाइश का दरवाज़ा बंद कर लो। फिर जानू ए महब्बत के बल बैठ जाओ। अगर तुम ने येह काम कर लिया तो समझो के बस तसव्वुफ़ के आलिम हो गए। तालिबे हक़ को येह बात जान व दिल से बजा लानी चाहिए। इंशा अल्लाह त'आला ऐसा करने से वोह शर ए शैतानी से निजात पाएगा। और दोनों जहां की मुरादें हासिल करेगा।

एक रोज़ मेरे शैख़ साहब अलैहिर्रहमह ने फ़रमाया मुईनुद्दीन क्या तुझे मालूम है के साहिबे हुज़ूर किसे कहते हैं? देखो साहिबे हुज़ूर वो है के हर वक़्त मक़ामे उबूदियत में हो और हर एक वाक़ेअ को अल्लाह त'आला की तरफ़ से ख़याल करे और तमाम इबादतों का मक़सद यही है । जिसे येह हासिल है वोह जहां का बादशाह है बल्कि जहां का बादशाह उसका मोहताज है।

एक रोज़ मेरे शैख़ ने मुझे ख़िताब करके फ़रमाया के बाज़ दरवेश जो कहते है के जब तालिब कमाल हासिल कर लेता है तो उसे घबराहट रहती, येह ग़लत है। दूसरा येह के जो कहते हैं के इबादत करना भी उसके लिए जरूरी नहीं होता, ये भी गलत है। क्यूंकि जनाब सरवरे ए काएनात ﷺ हमेशा इबादत ए बंदगी और उबूदियत में सर बासुजूद रहे। बावजूद कमाले बंदगी के आख़िर येह फ़रमाया करते थे । (हम ने तेरी ऐसी बंदगी नही की जैसा के तेरा हक़ था) यानी कमा हक़ तेरी इबादत नही कर सकते और निहायत आजिज़ी से विर्दे ज़बान था- "मैं इस बात की गवाही देता हूँ के अल्लाह के सिवा कोई म'अबूद नहीं और येह मुहम्मद ﷺ उसका बंदा और भेजा हुआ है"।

पस यक़ीन जानो के जब आरिफ़ कमाल का दर्जा हासिल करता है तो उस वक़्त कमाल दर्जा की रियाज़त जिस से मुराद नमाज़ है निहायत सिद्क़ दिल से अदा करता है। इसी से हुज़ूरी व आगाही ज़्यादा हासिल होती है। बल्कि अहज़ुल ख़ास मेराज़ यही नमाज़ है। जब कोई शख़्स येह म'अलूम कर के सिद्क़ से काम लेता है तो उसे ऐसी प्यास महसूस होती है गोया उसने आग के कई प्याले पी रखे हैं। जूं जूं ऐसे प्याले पियेगा प्यास ग़लबा करती जाएगी। इस वास्ते को जमाले ना तनाही की इंतिहा नही । इस वक़्त इस का सुकून बे सुकूनी और आराम बे आरामी हो जाती है। ता वक़्ते के लिक़ा (दीदार) ए इलाही से मुशर्रफ़ न हो जाए।

दुसरा असरार (राज़)

मक्तूब 2

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

दर्द मंद तालिबे शौक़े दीदारे इलाही के इश्तियाक़ के आरज़ू मंद दरवेश जिफ़ाकश मेरे भाई ख़्वाजा कुतुबुद्दीन (रहमतुल्लाह अलैह) देहलवी अल्लाह त 'आला दोनो जहां में आप को सआदत नसीब करे।

सलामे मसनूना के बाद मक़सूद येह है के एक रोज़ हज़रत उसमाने हारूनी कुद्दसा सिर्रहू की ख़दिमत में ख़्वाजा नजमुद्दीन साहब रहमतुल्लाह अलैह सग़ीराए ख़्वाजा मुहम्मद तारिक रहमतुल्लाह अलैह और येह ख़ाक सार (ग़रीब नवाज़) हाज़िर थे के इतने में एक शख़्स ने हाज़िर ए खिदमत हो कर ख़्वाजा साहब से पूछा के येह क्यूंकर मालूम हो के किसी शख़्स को कुर्बे इलाही हासिल हुआ है। ख़्वाजा साहब रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमायाः नेक आमाल की तौफीक़ बड़ी अच्छी शिनाख़्त है। यक़ीन जानो जिस शख़्स को नेक कामों की तौफीक़ दी गई है उसके लिए कुर्ब का दरवाज़ा खुल गया है।

फिर आबदीदा हो कर फ़रमाया कि एक शख़्स के यहाँ एक साहिबे वक़्त के लौंडी थी जो आधी रात के वक़्त उठ कर वुज़ू करके दो रकअत नमाज़ पढ़ती और शुक्रे हक़ बजा लाती और हाथ उठा कर दुआ करती के परवरदीगारा! मैं तेरा कुर्ब हासिल कर चुकी हूँ। मुझे अब अपने से दूर न रखना। उस लौंडी के आक़ा ने येह माजरा सुन के उससे पूछा तुम्हे क्यूंकर (कैसे) मालूम है के तुम्हे कुर्बे इलाही हासिल है? कहा साहब मुझे यूँ मालूम है के मुझे आधी रात के वक़्त जाग कर दो रकअत नमाज़ पढ़ने की तौफीक़ दे रखी है इस वास्ते मैं जानती हूँ के मुझे कुर्ब हासिल है आक़ा ने कहा लौंडी जाओ मैंने तुम्हे लिल्लाह (अल्लाह के वास्ते) आज़ाद किया।

पस इंसान को दिन रात इबादते इलाही में मशगूल रहना चाहिए ताकि उसका नाम नेक लोगों में दर्ज हो जाए और नफ़्स व शैतान के कैद (मक्र) से बच जाए। वस्सलाम

❖ ❖ ❖

तीसरा असरार (राज़)

मक्तूब 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहुस्समद (अल्लाह को किसी चीज़ की कोई ज़रूरत नहीं) के असरार से वाकिफ़ "लम यलिद व लम यूलद" की अनवार (रोशनी) के माहिर, मेरे भाई ख़्वाजा कुतुबुद्दीन (रहमतुल्लाह अलैह) देहलवी अल्लाह त'आला आप के दरजात और ज़्यादा करे।

फ़कीर पुरतफ़सीर (लफ़्ज़ों के सही मा'ने पैदा करने वाले) मुईनुद्दीन संजरी की तरफ़ से खुशी व खुर्रमी आमेज़ व उंस और महब्बत भरा सलाम हो, मक़सूद येह कि ता दमे तहरीर सेहत ए ज़ाहिरी के सबब मशकूर हूँ।

अल्लाह त'आला आपको सेहते दारैन अता फ़रमाए।

भाई जान ! मेरे शैख़ (पीर) ख़्वाजा उस्मान हारूनी फ़रमाते हैं सिवाए अहले मारिफ़त के और किसी को इश्क़ के रुमूज़ात से वाक़िफ़ नहीं करना चाहिए, ख़्वाजा शैख़ स'अदी मीगोई रहमतुल्लाह अलैह ने आं जनाब से पूछा अहले मारिफ़त (अल्लाह की पहचान वालों) को क्यूंकर पहचान सकते हैं? तो ख़्वाजा साहब रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया अहले मारिफ़त की पहचान तर्क (त्याग, कुर्बानी) है। जिसमे तर्क होगी यक़ीन जानो वोह अहले मारिफ़त है। और उसे खुदा शनासी (खुदा की पहचान) हासिल है और जिसमें तर्क नहीं उसमें मारिफ़ते हक़ की बू (महक) भी नहीं। येह अच्छी तरह यक़ीन कर लो कलमा ए शहादत और नफ़ी-असबात हक़ त'आला की मारिफ़त है। माल (पैसा) व मर्तबा (दुनियवी शोहरत) बड़ी भारी बुत है और उन्होंने बहुत लोगों को सीधे रास्ते से गुमराह किया और कर रहे हैं। येह मअबूदे ख़लाइक़ बन रहे हैं। बहुत लोग जाह व माल की परस्तिश (इबादत) करते हैं। (यानी ज़िन्दगी का असल मक़सद पैसा कमाना समझ लिए है और तमाम खून-पसीना, इल्म व अमल, ज़ाहिर व बातिन को माल कमाने में लगा रहे है- हिंदी मुतर्जिम)

पस जिस ने माल और मरतबे को दिल से निकाल दिया (यानी जो माल से महब्बत न रखते हुए सिर्फ जरूरत तक महदूद रहे) उसने पूरी नफ़ी (बातिल को तर्क)

कर दी और जिसे अल्लाह त'आला की पहचान हासिल हो गयी गोया उसने पूरा-पूरा असबात (साबित) कर लिया और ये बात "ला-इलाह-इल्लल्लाह" के कहने और इस पर अमल करने से हासिल होती है पस जिसने कलमा-ए- शहादत नहीं पढ़ा (हक़ीक़ी माना समझ कर) उसे ख़ुदा शनासी (अल्लाह की पहचान) हासिल नहीं होती। वस्सलाम।

Related

इस उम्मत का फ़ितना माल (दौलत) है

हदीस : हज़रत कआब बिन अयाज़ रदीअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलल्लाह ﷺ का इर्शाद है कि हर उम्मत के लिये फितना है और मेरी उम्मत का फ़ितना 'माल है" (तिर्मिज़ी)

माल की महब्बत यानी दुनिया (बातिल) की महब्बत

हज़रते अताअ बिन जियाद कहते हैं मेरे सामने दुनिया तमाम जीनतों से सज कर आई तो मैं ने कहा मैं तेरी बुराई से अल्लाह की पनाह चाहता हूं। दुनिया ने कहा अगर तुम मेरे शर से बचना चाहते हो तो रुपये पैसे से दुश्मनी रखो क्यों कि दौलत और रुपये पैसे हासिल करना दुनिया को हासिल करना है जो उन से अलग थलग रहे वह दुनिया से बच जाता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 38, पेज 251)

माल की महब्बत यानी शैतान (बातिल) की इताअत

हज़रते हसन रहमतुल्लाह अलैह का कौल है जिस ने दौलत को इज़्ज़त दी अल्लाह ने उसे ज़लील किया। कहते हैं जब रुपया पैसा बनता है तो सब से पहले शैतान उन्हें उठा कर माथे से लगा कर चूमता है और रूपया से कहता है। जिस शख्स ने तुम से मुहब्बत की वह यकीनन मेरा बन्दा है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 38, पेज 250)

फासिक व फाजिर की दौलत पर रश्क न करो

हदीस : हज़रत अबहुरैरह रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ का इर्शाद पाक है कि "किसी फासिक व फाजिर (दुनियादार) की दौलत पर रश्क न करो इसलिये कि तुम नहीं जानते कि मरने के बाद उसके साथ क्या सलूक होने वाला है। (मुस्लिम)

बेहतरीन माल व दौलत

हजरते सुफियान रहमतुल्लाह अलैह का कौल है कि तुम्हारे लिए बेहतरीन दौलत वह है जो तुम्हारे कब्जे में नहीं है और कब्जे में आई हुई दौलत में वह बेहतरीन दौलत है जो तुम्हारे हाथ से निकल कर अल्लाह के राह में खर्च हो गई हो। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 33, पेज 218)

नोट - ख्याल रहे Related आयत व रिवायत इस किताब की तहरीर नहीं , हिन्दी मुतर्जिम की तरफ से है

चौथा असरार (राज़)

मक्तूब 4

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

हक़ाइक़ (असलियत) व मआ़रिफ़ (अल्लाह की पहचान) से वाक़िफ़, रब्बुल आ़रिफ़ीन के आशिक़, मेरे भाई ख़्वाजा कुतुबुद्दीन (रहमतुल्लाह अलैह) देहलवी

वाज़ेह रहे के इंसानों में सब से दाना (अक़्लमन्द) वोह फ़ुक़रा हैं जिन्होंने ने दरवेशी और नामुरादी को इख़्तियार कर रखा है। क्योंकि हर एक मुराद में नामुरादी है और नामुरादी में मुराद है।

बर ख़िलाफ़ इसके अहले गफ़लत ने सेहत को ज़हमत और ज़हमत को सेहत ख़याल कर रखा है। पस दाना वही है के जब किसी दुनियवी मुराद का उसे ख़याल आया उसे फ़ौरन तर्क करके नामुरादी और फ़क़्र (फ़क़ीरी) को इख़्तियार कर ले। अपनी मुराद को छोड़ कर नामुरादी से मुआफ़िक़त कर ले।

पस मर्द को हक़ त'आला से वाबस्तगी लाज़िम है। जो हमेशा था और हमेशा रहेगा। अगर अल्लाह त'आला आंख दे हर राह में सिवा ए उसके जलवे के और कुछ न देखे और दोनों जहां में जिसकी तरफ़ निगाह करे उस में उस की हक़ीक़त देखे। दीनदारी और (बातिनी) आंख हासिल कर क्यूंकि अगर ग़ौर से देखो तो ख़ाक का हर एक ज़र्रा जामे जहां नुमा है (यानी पूरी दुनिया का जाएज़ा एक नज़र में हो जाए)। सिवा ए ज़ाहिरी मिलाप के शौक़ के और क्या लाखों।

पाँचवा असरार (राज़)

मक्तूब 5

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

वासिलों के बरगुज़ीदा, रब्बुल आलमीन के आशिक़, मेरे भाई ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन देहलवी (रहमतुल्लाहि अलैह) म'अबूदे हक़ीक़ी की पनाह में हो कर शाद काम रहें।

एक रोज़ येह दुआ गो (ग़रीब नवाज़) हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाहि अलैह की खिदमत में हाज़िर था कि एक शख़्स ने आकर अर्ज़ किया शैख़ साहब मैंने मुख़्तलिफ़ उलूम हासिल किए, बहुत ज़ुहद किया लेकिन मक़सद नहीं पाया। ख़्वाजा साहब ने फ़रमाया तुम्हे सिर्फ़ एक बात पर अमल करना चाहिए आलिम भी हो जाओगे और ज़ाहिद भी। वोह येह कि जनाबे रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया "दुनिया का तर्क करना तमाम इबादतों का सिर है और दुनिया की महब्बत तमाम ख़ताओं की जड़ है"।

अगर तुम इस हदीस पर अमल करो तो फिर तुम्हें किसी और इल्म की ज़रूरत न रहे। गो इल्म एक ही लफ्ज़ है लेकिन इसका कह लेना आसान है मगर इस पर अमल करना मुश्किल है।

पस यक़ीन जानो के तर्क उस वक़्त तक हासिल नहीं हो सकती जब तक महब्बत ब दर्जा ए कमाल न हो और महब्बत उस वक़्त पैदा होती है जब अल्लाह त'आला हिदायत करे। हक़ त'आला की हिदायत के बग़ैर मक़सूद हासिल नहीं हो सकता। (जिसे अल्लाह त'आला हिदायत दे वही हिदायत पा सकता है)।

पस इंसान को लाज़िम है के अल्लाह त'आला ही का लिहाज़ करके अपने वक़्ते अज़ीज़ व शरीफ़ को दुनियवी ख़्वाहिशात के पूरा करने में ज़ाए न करे। बल्कि वक़्त को ग़नीमत समझ कर फक़्र व फाक़ा में उम्र बसर करे। इज्ज़ व ज़ारी से पेश आए। गुनाहों की शर्मिंदगी के मारे सर न उठाए। हर हालत में आजिज़ी और तज़र्रु'अ से पेश आए। क्यूंकि उंस, बंदगी और इबादत और सबसे अच्छा काम यही इज्ज़ व नियाज़ है।

बाद अज़ां इस मौक़े की मुनासिबत से येह हदीस बयान फ़रमाई

हातिम असम रहमतुल्लाहि अलैह ख़्वाजा शफीक़ बल्ख़ी रहमतुल्लाहि अलैह के शागिर्द और मुरीद थे। एक रोज़ शैख़ साहब ने पूछा कितने अर्से से तुम मेरी महब्बत व ख़िदमत में सरगर्म हो और मेरी बातें सुनते आए हो? अर्ज़ किया 30 साल से। पूछा फिर उससे क्या कुछ हासिल किया और क्या कुछ फ़ाएदा उठाया? अर्ज़ किया आठ फ़ाएदे हासिल किए। पूछा क्या उससे पहले येह फ़ाएदे हासिल थे? अर्ज़ किया शैख़ साहब अगर आप सच पूछें तो तो उनसे ज़्यादा की अब मुझे ज़रूरत भी नहीं फ़रमाया "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राज़ी'ऊन"।

हातिम मैंने सारी उम्र तेरे काम में सर्फ़ कर दी मैं नहीं चाहता कि तू इससे ज़्यादा हासिल करे। अर्ज़ किया मेरे लिए इतना ही इल्म काफ़ी है क्यूंकि दोनों जहां की निजात इन फ़ाएदों में आ जाती है। फ़रमाया अच्छा उन्हें बयान करो। अर्ज़ किया उस्ताद साहब

अमले स़ालिहा

1. पहले येह कि मैं ख़िलक़त को ग़ौर से देखा तो म'अलूम हुआ कि हर एक शख़्स ने किसी न किसी को अपना महबूब वह माशूक़ क़रार दे रखा है। वोह महबूब व माशूक़ इस क़िस्म के हैं के बाज़ मर्ज़ ए मौत तक उसके साथ रहते हैं, बाज़ मरने तक, बाज़ लबे गौर (दफ़न) तक उसके बाद कोई भी साथ नहीं जाता। कोई ऐसा नहीं कि इंसान के साथ क़ब्र में जाकर उसका ग़म ख़्वार और का चिराग़ हो क़यामत की मंजिलें तय कराए। मुझे म'अलूम हुआ कि इन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ महबूब सिर्फ़ आमाले सालिहा है सो मैंने उन्हें अपना महबूब बनाया और उन्हें अपने लिए हुज्जत इख़्तियार किया ताकि क़ब्र में भी मेरी ग़मख़्वारी करें, मेरे लिए चिराग़ हों और हर एक मंज़िल में मेरे साथ रहें और मुझे छोड़ ना जाएं।

ख़्वाजा शफ़ीक़ रहमतुल्लाहि अलैह ने फ़रमाया हातिम तूने बहुत अच्छा किया।

नफ़्स की मुख़ालिफ़त

2. दूसरा येह के जब मैंने लोगों को ग़ौर से देखा तो म'अलूम हुआ कि सब के सब हिर्स व हवा के पैरो (लालच और ख़्वाहिशात के ग़ुलाम) बने हुए हैं और नफ़्स के कहने पर चलते हैं। फिर मैंने इस आयत पर ग़ौर किया :

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَى

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَى

(तर्जुमा कंज़ुल ईमान) " **और वोह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका, तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है"**

(सूरह नाज़ियात, आयत नं. 40,41)

तो यक़ीन हो गया कि क़ुरआन शरीफ़ सच्चा है। इसलिए मैं नफ़्स की मुख़ालिफ़त पर कमर बस्ता हो गया और उसे मुजाहिदा के कुठाली पर रख दिया। उसकी (नफ़्स की) आरज़ू भी पूरी न कि, सिर्फ़ अल्लाह त'आला की इताअत से मुझे आराम हासिल होता रहा।

ख़्वाजा शफीक़ बल्ख़ी रहमतुल्लाहि अलैह ने फ़रमाया अल्लाह त'आला तुझे उसमें बरकत दे तूने खूब कहा और अच्छा किया।

सख़ावत का जज़्बा

3. तीसरा फ़ाएदा येह कि जब मैंने लोगों के हालात का मुशाहिदा ग़ौर से किया तो देखा कि हर शख़्स दुनिया के लिए कोशिश करता है रंज व मुसीबत बर्दाश्त करता है तब कहीं दुनियवी हुक्काम से कुछ हासिल होता है और फिर बड़ा खुश व खुर्रम होता है। बाद अज़ां मैंने इस आयत पर ग़ौर किया :

مَا عِندَكُمْ يَنفَدُ وَمَا عِندَ ٱللَّهِ بَاقٍ

(तर्जुमा कंज़ुल ईमान) **"जो तुम्हारे पास है हो चुकेगा (ख़त्म होने वाला है) और जो अल्लाह के पास है हमेशा रहने वाला है"।** तो जो कुछ मैंने जमा किया था सब राहे खुदा में सर्फ़ कर दिया और अपने आप को अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के सुपुर्द कर दिया । ताकि बारगाहे इलाही में बाक़ी रहे और आख़िरत में मेरा तोशा और बदला बदरक़ा बने।

ख़्वाजा शफ़ीक़ रहमतुल्लाहि अलैह ने फ़रमायाः अल्लाह त'आला तुझे बरकत दे

तूने बहुत अच्छा किया है।

तक़वा इख़्तियारी

4. चौथा येह के जब मैंने ख़िलक़त के हालात को ग़ौर से देखा तो म'अलूम हुआ के बाज़ लोगों ने आदमी का इज़्ज़ व शर्फ और उसकी बुज़ुर्गी कसरते अक़वाम को समझ रखा है और उस पर वोह फ़ख़्र करते हैं। बाज़ ने समझ रखा है के माल व औलाद पर इज़्जत का इन्हिसार (निर्भरता) है और उसका कमाया फ़ख़्र ख़याल करते हैं। बाद अज़ां मैंने आयत ए करीमा पर ख़याल किया

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاكُمْ

(तर्जुमा) बेशक अल्लाह के यहाँ तुम में ज़्यादा इज़्ज़त वाला वोह है जो तुम में ज़्यादा परहेज़गार (मुत्तक़ी) हैं" (कंज़ुल ईमान, सूरह हुजरात, आयत नं. 13) तो म'अलूम हुआ के बस यही ठीक और हक़ है और जो कुछ लोगों ने ख़याल कर रखा है वोह सरासर ग़लत है। सो मैंने तक़वा इख़्तियार किया। ताकि मैं भी बरगाहे इलाही का मुकर्रम बन जाऊं।

ख़्वाजा शफ़ीक़ रहमतुल्लाहि अलैह ने फ़रमायाः तूने बहुत अच्छा किया।

तर्के हसद

5. पांचवां येह है के मैंने जब लोगों के हालात को ग़ौर से देखा तो म'अलूम हुआ के एक दूसरे को महज़ हसद की वजह से बड़ाई से याद करते हैं और हसद भी माल, मर्तबे और इल्म का करते है। फिर मैंने इस आयत पर गौर किया

"हमने उन में दुनियवी ज़िन्दगी के लिए रोज़ी वग़ैरा तक़सीम की"

तो जब अज़ल में उनके हिस्से येह चीज़ आ चुकी है और किसी का उसमें इख़्तियार नहीं। तो फिर हसद बे फ़ाएदा है तब से मैंने हसद करना छोड़ दिया और हर एक से सुलह इख़्तियार की।

ख़्वाजा शफ़ीक़ रहमतुल्लाहि अलैह ने फ़रमायाः तूने बहुत अच्छा किया।

शैतान की मुख़ालिफ़त

6. छठा येह है के जब दुनिया को ग़ौर से देखा तो म'अलूम हुआ के बाज़ आपस में दुश्मनी रखते हैं और किसी ख़ास काम के लिए एक दूसरे से लाग बाज़ी करते हैं। फिर मैंने इस आयत को ग़ौर से देखा :-

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُ

(तर्जुमा)" **बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो"**

(कंज़ुल ईमान, सूरह फ़ातिर, आयत नं. 6)

तो मुझे म'अलूम हो गया कि अल्लाह त'आला का कलाम बिल्कुल सच्चा है वाक़ई हमारा दुश्मन शैतान है। शैतान की पैरवी नहीं करनी चाहिए तब से मैं सिर्फ़ शैतान को अपना दुश्मन जानता हूॅ। न उसकी पैरवी करता हूँ न फ़रमाबरदारी। बल्कि अल्लाह त'आला के अहकाम बजा लाता हूॅ। उसी की बुज़ुर्गी (बयान) करता हूॅ और ठीक भी यही है , चुनांचे खुदा त'आला ने फ़रमाया :-

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ
وَأَنِ اعْبُدُونِي هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ

(तर्जुमा) **"ऐ औलादे आदम! (इंसान) क्या मैं ने तुम से एहद न लिया था कि शैतान को न पूजना बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है, और अगर तुम मेरी बन्दगी करो तो यही सीधी राह है" ।** (कंज़ुल ईमान, सूरह यासीन, आयत नं. 60,61)

ख़्वाजा शफ़ीक़ अलैहिर्रहमह ने फ़रमाया तुमने बहुत खूब किया।

अल्लाह रिज़्क़ का ज़ामिन है

7. सातवां येह कि जब मैंने ख़िलक़त को ग़ौर से देखा तो म'अलूम हुआ हर शख़्स अपनी रोज़ी व म'आश के लिए सरतोड़ कोशिश करता है और इस वजह से हराम व शुबह में पड़ता है और अपने आप को ज़लील करता है फिर मैंने इस आयत को ग़ौर से देखा

مَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا

तर्जुमा **"ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिसका रिज़्क़ (रोज़ी) अल्लाह के ज़िम्मे करम पर न हो"** (कंज़ुल ईमान, सुरह हूद, आयत नं. 6)

तो समझ गया कि उसका फ़रमान हक़ है मैं भी एक जानदार हूं तब से मैं अल्लाह त'आला की (दीन की) खिदमत में मशगूल हो गया और मुझे यक़ीन हो गया कि मेरी रोज़ी वह बिल ज़रूर पहुंचाएगा क्यूंकि वोह ख़ुद इस बात का ज़ामिन है।

ख़्वाजा शफ़ीक़ अलैहिर्रहमह ने फ़रमाया तूने बहुत अच्छा किया अब आठवां फ़ाएदा बयान कर, अर्ज़ किया

अल्लाह पर तवक्कुल

8. आठवाँ येह कि जब मैंने ख़ल्क़े ख़ुदा को ग़ौर से देखा तो म'अलूम हुआ कि हर शख़्स को किसी न किसी चीज़ पर भरोसा है बाज़ को सोने चांदी पर बाज़ को मिल्क व माल पर। फिर मैंने इस आयत को ग़ौर से देखा (तर्जुमा)

وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهُ

(तर्जुमा) **"जो शख़्स अल्लाह त'आला पर भरोसा करता है तो अल्लाह त'आला उसके लिए काफ़ी होता है"** (कंज़ुल ईमान, सूरह तलाक़, आयत नं. 3)

तब से मैंने अल्लाह त'आला पर तवक्कुल किया वोह मुझे काफ़ी है और मेरा उम्दह वकील है।

ख़्वाजा शफ़ीक़ अलैहिर्रहमह ने फ़रमाया हातिम अल्लाह तुम्हें इन बातों पर अमल की तौफीक़ दे मैं तौरात, इंजील, ज़बूर व कुरआन का ग़ौर से मुतालआ किया तो इन चारों किताबों से यही आठ बातें हासिल हुईं। जो इन पर अमल करता है गोया इन चारों किताबों पर अमल करता है।

इस हिकायत से तुझे म'अलूम हो गया की ज़्यादा इल्म की ज़रूरत नहीं अमल की ज़रूरत है।

वस्सलाम

छट्ठा असरार (राज़)

मक्तूब 6

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

मखज़ने असरारे यज़दानी, म'अदने ए फुयूज़ाते सुबहानी, मेरे भाई ख़ूवाजा कुतुबुद्दीन (रहमतुल्लाह अलैह) देहलवी, अल्लाह त'आला आपको सलामत रखे।

एक रोज़ मेरे शैख़ साहब रहमतुल्लाह अलैह ने नफ़ी व असबात के कलमे के बाबत क्या ही अच्छा फ़रमाया के नफ़ी (बातिल खुदाओं का इनकार) अपने आप (स्वार्थ) को न देखना और अस्बात (एक अल्लाह का इक़रार) अल्लाह त'आला को देखना है क्यूंकि खुद बीन (खुद को देखने/पहचानने वाला) खुदा बीन (खुदा को देखने/पहचानने वाला) नहीं हो सकता। पस नफ़ी करने वाला होना चाहिए वरना नफ़ी का कुछ फ़ाएदा नहीं। अगर येह ख़याल करे कि हस्ती सिर्फ़ अल्लाह त'आला की हस्ती है तो मत़लब हासिल होता है।

वाज़ेह रहे के कलमा ए शहादत, नमाज़, रोज़ा वग़ैरह की सूरत (ज़ाहिरी) भी है और हक़ीक़त (बातिनी) भी। इन हक़ाइक़ को छोड़ कर सिर्फ़ ज़ाहिरी सूरतों पर क़नाअत कर लेना फुज़ूल है वोह शख़्स बड़ा ही अहमक़ है जो इन के हक़ाइक़ तक नहीं पहुॅचता।

फिर फ़रमाया के अल्लाह त'आला हमेशा था और हमेशा रहेगा। सालिक इब्तिदा में नाबीना (अन्धा) होता है जब हक़ त'आला की तरफ़ से उसे बीनाई (बातिनी आँख) हासिल हो जाती है तो फिर उससे देखता और सुनता है, अपने आप को फ़रामोश कर देता (भुला देता) है। जब ऐसी हालत हो जाए तो वासिल और हमेशा के लिए ज़िन्दा हो जाता है।

वस्सलाम।

सातवाँ असरार (राज़)

मक्तूब 7

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

आरिफ़ ए म'अरूफ, हक़ आगाह, आशिक़ ए अल्लाह, मेरे भाई ख़्वाजा कुतुबुद्दीन औशी अल्लाह त'आला आप के फक्र को ज़्यादा करे। दुआ गो की तरफ से उंस आमेज़ सलाम के बाद मकशूफ़ राहे मारिफ़त पैराए हो।

फ़कीर व मुर्शिद ए कामिल की अलामत

अजीज़े मन! (मेरे दोस्त) अपने मुरीदों को ज़रूर बता देना के फ़कीर व मुर्शिद ए कामिल से क्या मुराद है और उसकी अलामात क्या हैं और येह क्यूंकर पहचाना जाता है।

मशाइख़ ए तरीक़त कुद्दसा सिर्रहुल असरार ने फ़रमाया हैः फ़कीर उस शख़्स को कहते हैं जो तमाम ज़रूरियात से फारिग़ हो और उसके बाक़ी रहने वाले चेहरे (जलवे) के सिवा और किसी चीज़ का तालिब न हो। चूंकि तमाम मौजूदात उसके बाक़ी रहने वाले जलवे के आइने का मज़हर है। इस वास्ते वोह इन से अपना मक़सूद देखता है।

बाज़ लोगों ने इसकी तशरीह यूं फ़रमाई है के कामिल फ़क़ीर उसे कहते हैं जिसके दिल से सिवा ए हक़ के सब कुछ दूर हो और अल्लाह त'आला के सिवा और कोई उसका मक़सूद या मतलूब न हो। जब मासिवा ए अल्लाह दिल से दूर हो जाता है (तो) मक़सद हासिल हो जाता है। पस तालिब को हमेशा मतलूब व मक़सूद के दरपै (तलाश में) रहना चाहिए। अब येह म'अलूम कर लेना चाहिए के मतलूब व मक़सूद क्या है।

सो वाज़ेह रहे के मक़सूद यही दर्द व सोज़ (पाने का दर्द व तड़प) है। ख़्वाह हकीक़ी हो ख़्वाह मजाज़ी। यहाँ सोज़े मजाज़ी से (मुराद) इब्तिदा ए शरीअत के अहकाम हैं (यानी इस्लाहे ज़ाहिरी)।